योजनाअें और सभा-सम्मेलन

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाअी देसाअी अंक २

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १० मार्च, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

सरकार जल्दी कदम अुठाये

अैसा दिखता है कि कोको-कोलाके कारखाने भारतके विभिन्न शहरोंमें शीघ्र ही खड़े करनेकी योजना चल रही है। कोको-कोला नुकसानदेह चीज है। अलकोहल या अफीमकी तरह अुसका दवाके रूपमें भी कोअी अुपयोग नहीं है। लोगोंने तो अिसका विरोध तभी किया था, जब दिल्लीमें अिसके पहले कारखानेकी शिलान्यास-विधिकी घोषणा हुअी थी। लेकिन अिस विरोधकी सुनवाअी नहीं हुअी। शायद वनस्पतिकी तरह अिसे भी तब तक बढ़ने दिया जायगा, जब तक कि अुसमें करोड़ों रुपयोंकी पूंजी न लग चुके, सैकड़ों अेजन्ट और अुनके कअी सौ नौकर-चाकर अुसके व्यापारमें न लग जायं और अपनी जीविकाके लिअे अुस पर निर्भर न करने लगें। तब अिस बुराअीको निकाल फेंकना बहुत मुश्किल हो जायगा। 'कण्ट्रोलकी नीति'के तरफदारोंके लिअे यह अेक अवसर है, जब वे स्वतंत्रतापूर्वक अेक लाभप्रद काम कर सकते हैं। जनताके सारे हितचिन्तक अुनके अिस कदमकी तारीफ करेंगे। यह अेक अैसा सवाल है, जिस पर जनताकी ओरसे किसी भी प्रकारका 'सीधा विरोध', फिर वह सत्याग्रहके ही रूपमें क्यों न हो, संकटसे खाली नहीं होगा। अैसा कोअी विरोध प्रगट हो, अुसके पहले ही सरकारको यह चीज समाप्त कर देनी चाहिये। यह कदम तो सिर्फ सरकार ही अुठा सकती है, और अिसमें शान्ति भंग होनेका भी कोअी डर नहीं है। सरकारको अैसी आशा नहीं करनी चाहिये कि वह लोकमत गढ़नेवालोंको नाराज भी करती रहेगी और साथ ही अपनी नीतियोंमें अुनका सहयोग भी अुसे मिलता रहेगा।

वर्धा, १४-२-'५१
(अंग्रेजीसे)

खुलासा

ता० २४-२-१९५१ के 'हरिजनसेवक'में 'क्रान्तिका अनुष्ठान' लेखमें अेक वाक्य है: "अिसीलिअे आप सब अिस जगह अपने सूतकी गुंडी देने आते हैं। जो आ नहीं सकते, वे दूसरोंके साथ गुंडियां भेजते हैं। यह कैसा पागलपन है?"

अिसका अर्थ लगानेमें पाठकोंको यह भ्रम हुआ है कि दूसरोंके साथ गुंडियां भेजना श्री विनोबाने नापसन्द किया है और अुसे पागलपन माना है। वैसा अिसका मतलब नहीं है। अुन्होंने तो पागलपन शब्दका अिस्तेमाल अिस दानकी विलक्षणता और नवीनताको समझाने की दृष्टिसे किया है। मतलब कि क्या यह हमारा अेक पागलपन समझा जाय? "वे दूसरोंके साथ गुंडियां भेजते हैं" की जगह "वे भी . . . भेजते हैं" लिखा जाता, तो संभवतः यह भ्रम न होता।

वर्धा, ३-३-'५१

'हरिजन' पत्रोंका मुफ्त वितरण

अेक सहृदय और गुणग्राही पाठक अपने पत्रमें लिखते हैं:

"मैं अेक और प्रस्ताव भी रखना चाहूंगा। मुझे लगता है कि 'हरिजन'का ज्यादा प्रचार किया जाना चाहिये। मेरा यकीन है कि जो व्यक्ति अिस पत्रको अेक बार पढ़ने लगता है वह अुसे हमेशा पढ़ता रहता है अगर आप अिसे किसी तरह स्कूलों और कॉलेजोंके पुस्तकालयोंमें दाखिल करा सकें, तो अिससे विद्यार्थियोंका बड़ा अुपकार होगा। मुझे याद है, जब मैं सेंट जेवियर्स कॉलेज, बम्बअीमें पढ़ता था, तब वहां यह पत्र मंगवाना शुरू हुआ था। कॉलेजके प्रधान अध्यापक, शिक्षक और विद्यार्थी सब अुसे बड़े चावसे पढ़ते थे। बादमें तो हम अिस पत्रकी दो प्रतियां मंगवाने लगे थे। आप अिस पत्रको दूसरी सार्वजनिक संस्थाओंको भी भिजवा सकते हैं। यदि संभव हो तो आप अिसे बहुतेरे छात्रालयोंको मुफ्तमें भिजवायें। यदि अिस कार्यके लिअे किसी निधिकी आवश्यकता हो, तो मैं खुशीसे अपना हिस्सा पूरा करूंगा।

"अन्तमें, मैं आपको बधाअी देता हूं कि महात्मा गांधी और श्री महादेव देसाअीकी मृत्युके बाद आपने अिन पत्रोंका अूंचा स्तर कायम रखा है।"

पाठक जानते ही हैं कि ये पत्र विज्ञापनों या जनताके दान पर नहीं चलते। अिसलिअे यह जरूरी है कि वे स्वावलम्बी हों। अिसलिअे कुछ अिनी-गिनी कापियां ही मुफ्त बांटी जा सकती हैं। लेकिन यदि अुपर्युक्त भाअीकी तरह, पाठकोंमें से कोअी कद्रदां 'हरिजन' पत्रोंके व्यवस्थापकके पास कोअी रकम अिस कामके लिअे जमा कर देते हैं कि वे योग्य संस्थाओं या चन्दा देनेमें असमर्थ व्यक्तियोंको 'हरिजन'की प्रतियां मुफ्तमें भेजें, तो अैसा कर दिया जाता है। अैसी स्थितिमें दाता खुद यह भी बता सकता है कि वह अपने पैसेसे किनकी मदद करना चाहेगा।

पत्रके अन्तमें लेखकने मुझे जो बधाअी दी है, अुसके लिअे मैं अुनका कृतज्ञ हूं।

वर्धा, २१-२-'५१
(अंग्रेजीसे)

कि० घ० म०

अंग्रेजीका घेरा

अखबारोंमें यह खबर आअी है कि भारत सरकारकी अेक कमेटीने अंग्रेजी पढ़े हुअे बड़े सरकारी अधिकारियोंकी टीका की है। ये अधिकारी सरकारी कामकाज सम्बन्धी कागजों पर जो नोंध और सेरे लिखते हैं, अुनकी भाषा और शैली पर अुन्हें टोकनेकी जरूरत मालूम हुअी है। कमेटीने कहा है: "अधिकारियोंमें अैसी वृत्ति देखनेमें आती है कि वे मसौदों और नोंधोंकी भाषा और शैली सुधारनेकी दृष्टिसे ही अुनमें सुधार करते हैं। अैसा करनेसे मसौदे

www.vinoba.in

और नोंधें अनावश्यक रूपमें लम्बी हो जाती हैं; अुनमें लम्बी-लम्बी प्रस्तावनायें, साहित्यिक छटावाले वाक्य और बेकारके अुद्धरण दिये या अुल्लेख किये जाते हैं, जिन्हें छोड़ा जा सकता है।"

स्वराज्यकी लड़ाअी लड़ते-लड़ते आनेवाले लोगोंको अंग्रेजी आती नहीं, अिसलिअे वे अिस तरह टीका करते हैं। वर्ना अिन अधिकारियोंके पुराने मालिक तो अुनके अंग्रेजी साहित्यकी भी शोभा बढ़ानेवाले मसौदों और नोंधोंको देखकर अिन्हें कैसी शाबाशी देते? अिस तरह तैयार हुअे अधिकारियोंकी कदर तो करनी ही चाहिये! अिसके बदले कमेटी कहती है कि "स्पष्ट और सीधी शैलीमें" मसौदे वगैरा लिखे जाने चाहियें। लेकिन यह अुन्हें सीखनेको कब मिला! स्पष्ट और सीधी बात तो देशको स्वराज्य देनेकी थी। लेकिन अिस बातको अलग रखकर ही अुस समय सारे मसौदे और नोंधें लिखी जाती थीं; फिर अुनमें स्पष्ट और सीधी शैली कैसे आ सकती थी? और अिन अधिकारियोंको देशके कामोंसे फुरसत नहीं मिली, वर्ना वे सीधा साहित्य लिखकर ही अंग्रेजी साहित्यकी भी सेवा करते। लेकिन 'न मामासे काणा मामा अच्छा' अिस न्यायसे अुन्हें जो कुछ लिखनेको मिला, अुसीमें अुन्होंने अपनी साहित्य-शक्ति अुंड़ेल दी। अिससे तो अुन लोगोंकी व्यवहार-कुशलता भी मालूम होती है।

लेकिन अुस कमेटीवालोंको समझना चाहिये कि सरकारी अधिकारियोंको अंग्रेजीमें अिस तरह अूंची अुड़ानें मारनेकी जो आदत पड़ गअी है, वह तो भला कैसे मिट सकती है? जब तक देशकी प्रजाकी भाषामें तुरन्त काम शुरू करनेकी नीति नहीं अपनाअी जाती, तब तक अिस दुःखद अवस्थामें से नहीं निकला जा सकता। अैसा करनेके बजाय भारत सरकारने कमजोरी बताकर १५ बरसकी मियाद बांधकर स्वराज्यकी अुदय होती हुअी शक्तिको रोका है। तब फिर अधिकारियोंके खिलाफ शिकायत करें, तो भी वे क्यों सुनने लगे? अंग्रेजीका वर्चस्व आज घेरा डाले बैठा है; अुसे किसी भी तरह ठिकाने नहीं लगाया जायगा, तब तक हमारी जनताकी सच्ची शक्तिको खिलनेका मार्ग नहीं मिलेगा। अंग्रेजी भाषा कीमती है, लेकिन अुसका अैसा अुपयोग और महत्ता माननेकी बात तो हरगिज बरदाश्त नहीं की जा सकती, जो हमारा ही खातमा कर दे। अिस कामकी शुरुआत शिक्षा ही कर सकती है। तभी हवा बदलेगी और क्रान्ति होगी। किन्तु शिक्षा ही यदि कायर बन जाय, तो जनताको शक्ति कौन दे? क्या शिक्षामंत्री अिस पर विचार करेंगे?

२२-२-'५१
(गुजरातीसे)　　म० दे०

हमारा नया प्रकाशन

सर्वोदयका सिद्धान्त

संसारके सारे भागोंके लोग गांधीजीके जीवन और विचार-धारामें, खासकर जनवरी १९४८ में अुनके निर्वाणके बादसे, दिनोंदिन ज्यादा रस ले रहे हैं। वे गांधीवादी जीवन-पद्धतिके बारेमें अधिकाधिक जानना चाहते हैं, जो अनेक लोगोंके विचारसे दुनियाकी आजकी संकटपूर्ण स्थितिमें से बच निकलनेका अेकमात्र मार्ग है। सर्वोदय गांधीवादी जीवन-पद्धतिका केवल दूसरा नाम है।

आशा है यह छोटीसी पुस्तिका सर्वोदयके सिद्धांत और कार्यक्रमके बारेमें जिज्ञासु लोगोंके लिअे सहायक सिद्ध होगी।

कीमत ०-१२-०　　डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर,
अहमदाबाद – ९

हिमालयके सबक – १

(नाटकके पात्र)

१. स्वामी योगानन्द
२. कृष्णमूर्ति
३. भवानीसिंह
४. ब्रह्मचारी रामेश्वर दत्त
५. बिशन
६. खुद

हेतु

पशुलोककी स्थापनाके समयसे ही आसपासके पहाड़ी प्रदेशमें सेवाका क्षेत्र बढ़ानेका ही नहीं, बल्कि हिमालयके निचले प्रदेशमें आश्रमकी अेक शाखा खोलनेका भी मैं विचार कर रही थी।

जब तक आश्रमका काम सरकारी योजनाके रूपमें चला, तब तक अैसा करना आसान नहीं था। अिसलिअे मैंने पशुलोक सेवामंडलकी स्थापना हो जाने तक प्रतीक्षा की। अिसके बाद आसपासके हिस्सेका अध्ययन करनेके लिअे तथा बिगड़े हुअे स्वास्थ्यके कारण हवा परिवर्तन करनेके लिअे मैंने २-३ महीने पहाड़ोंमें बितानेकी योजना बनाअी। मैं मअीके मध्यमें निकल पड़नेके लिअे बहुत अुत्सुक थी, जिससे मुझे आसपासके प्रदेशको देखनेके लिअे अेक पूरा सूखा महीना मिल जाय। लेकिन मंडलकी रचनामें अैसी कठिनाअियां आअीं और अितनी देरी हुअी कि मअी और जूनका महीना भी बीत गया, पर मैं बाहर निकल न सकी। अब बरसात शुरू हो गअी थी और मुझे लगा कि सबसे नजदीककी जगह नीलकंठसे ही मुझे सन्तोष मानना पड़ेगा, जो पशुलोकके सामनेकी पर्वतमालाके अुस पार है।

खराब मौसमके कारण हमने तय किया कि यह सफर अेक दिनमें पूरा करनेकी कोशिश न की जाय और पहली रातको स्वर्गाश्रम (हृषीकेश) में सोया जाय, ताकि दूसरे दिन सुबह पांच मीलकी काफी सीधी और पत्थरोंवाली चढ़ाअी चढ़कर दूसरी तरफ १ मीलका अुतना ही अुतार पूरा किया जा सके।

नीलकंठकी तरफ

४ जुलाअीको शामके पांच बजे मान (घोड़े) पर बैठकर लक्ष्मण-झूला होती हुअी अंधेरा होनेसे पहले मैं स्वर्गाश्रम पहुंची। हमारी मंडलीके दूसरे सदस्य सामानके साथ मोटर-लारीमें बैठकर पहले ही चले गये थे।

घोड़े पर बैठकर किसी जगहसे प्रस्थान करनेमें बड़ा आल्हाद और मैत्रीपूर्ण अनुभव होता है। मोटरकी तेज मुसाफिरीमें अिसका बिलकुल अभाव होता है। घोड़े पर मुसाफिरी करते हुअे मैं रास्तेमें पेड़ों, पक्षियों और पशुओंसे बिदा ले सकी और रास्तेमें मिलनेवालोंसे प्रेमभरी दो बातें कर सकी। यह सब स्वाभाविक और अनुरूप था।

सौभाग्यसे मौसम बड़ा खुशनुमा था। जब मैं स्वर्गाश्रम पहुंची, तब हमारी मंडली खाना बनानेमें लग चुकी थी। अिसलिअे जल्दी ही हमें शामका भोजन मिल गया। मानको भी अुसकी चन्दी मिल गअी। और बादमें अुसे बरामदेमें अेक तरफ बांध दिया गया।

तूफानी घोड़े

अुस दिन रातको आश्रमके अहातेमें दो-तीन तूफानी घोड़े खुले चर रहे थे। थोड़ी देर बाद ही वे मानके पास जानेके लिअे हिन-हिनाने लगे। अिसलिअे स्वामीजी और दो लड़कोंने अेक प्रकारकी बाड़ बनानेके लिअे अपने बिस्तर बाहर लगा लिये। लेकिन काले बादल आसमानमें छा गये और थोड़ी ही देरमें बारिश होने लगी। अिस कारणसे मानके साथ सबको बरामदेका आसरा लेना पड़ा। फिर भी वे तूफानी घोड़े अिधर-अुधर चरते रहे और मेरी खाटके नजदीक बंधा हुआ मान भी बार-बार जोरसे हिनहिनाकर अपनी राय जाहिर करता रहा। अुसकी आवाजसे नींदमें खलल पड़ ही रहा था, अूपरसे

www.vinoba.in

मच्छर भी थे और मूसलधार पानी बरस रहा था। अिसलिअे मुझे सारी रात जरा भी नींद नहीं आअी।

प्रकृतिका रौद्र रूप

सवेरा हो गया, तब भी पानी बरस ही रहा था। हम लोगोंने नाश्ता किया, अपना सामान बांधा और पानी खुलनेकी राह देखने लगे। आखिरकार बारिश बन्द हुअी, यद्यपि आसमानमें काले बादल तो मंडरा ही रहे थे। हम रवाना हुअे। मुश्किलसे हमने आधे मिलका सफर किया होगा कि बारिश फिर शुरू हो गअी। जैसे-जैसे हम अूपर चढ़ते गये, वैसे-वैसे बादल ज्यादा घने होते गये और चारों तरफ गड़गड़ाहट सुनाअी देने लगी। रास्ते परके बड़े-बड़े पेड़ोंके सिवा दूसरा कुछ दिखाअी नहीं देता था।

बारिश गिर रही हो, अुस दिन आदमी कपड़े गीले हो जाने और दूसरी मुसीबतोंके डरसे हमेशा पानी खुलनेकी राह देखता बैठा रहता है। लेकिन आंधी, तूफान और बारिशमें बाहर निकलनेसे सचमूच बड़ा सुन्दर और रोमांचक अनुभव होता है। गरजते हुअे बादलोंके बीचसे घोड़े पर बैठकर मैं जब आगे बढ़ रही थी, अुस समय मुझे अपनी जवानीके दिन याद आ गये। अुन दिनोंमें बरसाती कोट पहनकर मैं बरसात और आंधीके तूफानमें अिंग्लैंडके दक्षिणी-पश्चिमी किनारेके अूबड़-खाबड़ प्रदेशमें निकल पड़ती थी। मेरे चेहरे पर गिरनेवाली पानीकी बूंदोंकी चोटसे और नीचेकी चट्टानों पर निरन्तर गर्जनाके साथ टकरानेवाली अतलांतिककी लहरोंसे अुड़नेवाले नमकीन जलकणोंकी गन्धसे मुझे बड़ा आनन्द होता था। घरमें घुसकर बैठे रहनेवालेको प्रकृतिके रौद्र रूपसे मिलनेवाली सुन्दर प्रेरणाका कभी अनुभव नहीं होता।

(अंग्रेजीसे)

मीरा

कोको-कोलाका भारत पर आक्रमण

कोको-कोला नामका अमेरिकन पेय भारतमें धीरे-धीरे प्रवेश कर रहा है। दो माह पहले अिसका अेक कारखाना दिल्लीमें खोला गया था। शीघ्र ही अेक नया कारखाना बम्बअीमें काम करना शुरू करेगा। बादमें कलकत्ता और मद्रासकी बारी आयेगी। बड़े शहरोंके बाद फिर अिस अुद्योगके व्यापारी अुन शहरोंके पासवाले अिलाकोंमें घुसने और फैलनेकी कोशिश करेंगे।

फ्रांसमें कोको-कोला पर बन्दी

कनाड़ा, आस्ट्रिया, अिटली और फ्रांस — जिन-जिन देशोंमें यह पेय पहुंचा है, अुनके कड़वे अनुभवसे भारतकी जनताको अिस चीजके खिलाफ चेतावनी लेनी चाहिये। अिन देशोंमें से यद्यपि किसी भी देशमें अिस पेयको अच्छा नहीं माना गया है, लेकिन अिस व्यापारके पीछे जो शक्तिशाली स्वार्थ काम कर रहे हैं, अुनका सफल मुकाबला सिर्फ फ्रांसने ही किया है।

फ्रांसमें जन-स्वास्थ्यकी बड़ी कौंसिल और राष्ट्रीय रसायनशाला दोनों बड़ी संस्थाओंने अिस चीजकी निर्दोषताके सम्बन्धमें शंका प्रगट की। अिन संस्थाओंकी राय तथा कुछ दूसरे प्रमाणोंके आधार पर फ्रांसकी संसदमें अिस पेय पर प्रतिबन्ध लगानेके लिअे अेक बिल पेश किया गया। २२ जुलाअी, १९५० को यह बिल अेक जांच-समितिको सौंपा गया।

बादमें, जांच-समितिने अपनी रिपोर्ट दी और अुसमें अेकमत होकर सिफारिश की कि अिसे बन्द कर देना चाहिये। फलतः अुसे बन्द कर दिया गया।

भारतकी ही तरह फ्रांस तथा दूसरे देशोंमें कोको-कोलाके व्यापारके लिअे अमरीकी कम्पनियां नहीं खोली गअीं। बेचने, बोतलें आदिका काम देशी कम्पनियां ही करती थीं। लेकिन अिस चीजके निर्माणमें लगनेवाला अर्क बाहरसे मंगाया जाता था।

अिस धन्धेका अेक दूसरा भयानक पहलू, जिससे हमारे देशको खास खतरा है, यह है कि अिसमें नये ढंगके अत्यन्त विकसित यंत्रोंका अुपयोग होता है, जिसके कारण ज्यादा मजदूरोंकी जरूरत नहीं होती। बहुत कम मजदूरोंमें काम चल जाता है। अुदाहरणके लिअे, बेलजियममें अुसे बनाने और देशभरमें अुसका वितरण करनेका सारा काम सिर्फ ३५० मजदूर कर लेते हैं।

आरोग्यकी हानि

कोको-कोला जैसे पेयका पीनेवालोंके स्वास्थ्य पर कितना बुरा असर होगा, अिस सवाल पर जितना कम ध्यान दिया गया है, अुसे देखकर आश्चर्य होता है। अुसके अुपादानोंमें पानी, शक्कर, कैरामल, फासफरिक अेसिड, वनिल्ला, कैफीन तथा कोको नामके पौधेकी पत्तियों और बीजोंका अर्क आदि हैं। कहा जाता है कि, कोको-कोलाकी ६ औंसकी शीशीमें ५४ मिलिग्राम कैफीन होता है।

कैफीन थोड़ी मात्रामें शरीर पर अुत्तेजक प्रभाव अुत्पन्न करता है, लेकिन ज्यादा मात्रामें लिया जाय तो सुस्ती आती है तथा दूसरी हानियां होती हैं। कैफीन ज्यादा मात्रामें लेने पर होनेवाली हानियोंकी बात कअी विद्वानोंने कही है। अैसे कअी अुदाहरण हैं, जिनमें पाया गया है कि ज्यादा कैफीनवाले पेय पीते रहनेसे हृदयकी कमजोरी आयी या केन्द्रकी रक्त-वाहिनियों पर बुरा असर हुआ। रातकी कंपकंपी, निद्रा-नाश, ज्ञान-तंतुओंकी शिथिलता, मनकी अस्थिरता, अपच, दिमागकी बेचैनी, स्नायुओंकी दुर्बलता आदि अनेक दूसरे दुष्परिणाम अिसके अधिक सेवनसे अुत्पन्न होते हैं।

कोलम्बिया विश्व-विद्यालयके न्यूयार्क कॉलेजके डीन डॉ० अेच० अेच० रस्बीका कहना है कि "फिर भी यह सही है कि कैफीन अेक असली जहर है। अुसके दीर्घकालिक और तात्कालिक परिणाम, दोनों यह सिद्ध करते हैं। जब अुसे पेयकी तरह लिया जाता है, तो वह धीरे-धीरे अेक व्यसन बन जाता है। अिसका व्यसन परिणाममें अुतना तीव्र नहीं होता, जितना किसी नशीले पदार्थका, लेकिन तब भी अुसकी आदत अुतनी ही गहरी हो जाती है। मात्रामें चाहे वह अुतना अधिक न हो, पर परिणाम धीरे-धीरे बढ़ता रहता है और अिकट्ठा होकर प्रगट होता है। अिसके लगातार सेवनसे हृदयकी क्रिया तथा दिमागके रक्तके प्रसरणमें स्थायी गड़बड़ पैदा हो जाती है। और जब अुसे मिठाअियों आदिके साथ अर्कके रूपमें अिस तरह लेते हैं कि अुसके स्वादका लोभ लग जाय, तब तो अुसके व्यसन बन जानेका डर और भी बढ़ जाता है।" डॉ० डब्ल्यू० अेन० लेस्निन्स्कीके मतानुसार "कैफीनका जहरीला असर बच्चों पर विशेष होता है। वह अुनके दिमागमें क्षोभ अुत्पन्न करता है और शरीरकी क्रियाओंमें गड़बड़ी पैदा करता है। कैफीनके अधिक सेवनसे शरीरकी बाढ़ भी रुकती है।"

फ्रांसकी संसदमें जब कोको-कोला-प्रतिबन्धक बिल पर बहस हो रही थी, तब अेक सदस्यने कहा था: "लेकिन मैं संसदका ध्यान अेक महत्त्वकी बात पर दिलाना चाहता हूं। . . . यह चीज, जैसा कि आप सब जानते हैं, जन-स्वास्थ्यके लिअे अेक बड़ा खतरा है।" अेक दूसरे सदस्यने कहा: "आप कहते हैं कि आप अेक अैसे पेय पर रोक नहीं लगा सकते, जिसे दुनियाभरमें लाखों लोग पीते हैं। लेकिन सोचिये, यह भी कोअी तर्क है? सदियों तक चीनी लोग अफीमका सेवन करते रहे हैं। लेकिन यह सोचकर क्या हम अपने देशमें अफीमकी खपतका नियमन करनेके लिअे कड़े अुपाय नहीं काममें लेंगे?"

दूसरे लेखमें हम चर्चा करेंगे कि भारतीय अुद्योगों पर अिसका क्या असर होगा?

[संक्षिप्त] ओक्टोपस

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
१० मार्च १९५१

योजनाअें और सभा-सम्मेलन

पश्चिम बंगालके रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंके अेक सम्मेलनका नीचे दिया जा रहा विवरण 'हरिजन'में प्रकाशनके लिअे आया है:

"पश्चिम बंगालके रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंका अेक सम्मेलन श्री जी० रामचन्द्रन्, मंत्री, अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघकी अध्यक्षतामें ता० १७ और १८ फरवरीको बलरामपुर (जिला मिदनापुर)में हुआ। अिस सम्मेलनमें डॉ० प्रफुल्लचन्द्र घोष सहित २५० रचनात्मक कार्यकर्त्ता अुपस्थित थे। सम्मेलनमें ये दो प्रस्ताव पास किये गये:

"१. अिस सम्मेलनकी साफ राय है कि रचनात्मक कार्यक्रममें – जिसे गांधीजीने देशके सामने रखा, और जिसका विकास अुनकी देखरेखमें हुआ – जिन लोगोंका विश्वास है, अुन्हें राष्ट्रीय योजनासे सम्बन्ध रखनेवाले महत्त्वके सवालों पर अब अेक ही आवाजसे बोलनेमें और देर नहीं करनी चाहिये, ताकि हमारे राष्ट्रीय विकासका रास्ता भरसक वही हो जिसकी कल्पना गांधीजीने की थी।

"अैसा करनेके लिअे शीघ्र ही रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंके प्रादेशिक सम्मेलन होने चाहियें और अन्तमें अेक अखिल भारतीय सम्मेलन होना चाहिये, जो नीचे लिखे काम करनेके लिअे कदम अुठायेगा:

(क) जो रचनात्मक काम अभी चल रहा है, अुसे मजबूत करना, गहरा करना और बढ़ाना;

(ख) रचनात्मक कामको ज्यादा वास्तविक और प्रभावकारी बनानेके लिअे तथा मौजूदा परिस्थितियोंमें लोगोंकी बढ़ती हुअी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिअे नयी शोध और प्रयोग करना;

(ग) अहिंसक अुपायों द्वारा वर्ग और जात-पांत-विहीन समाजकी रचनाके लिअे आवश्यक राष्ट्रीय पुनर्निर्माणकी अेक सम्पूर्ण योजना बनाना और लोगोंको अुसकी अच्छाअी समझाना;

(घ) मतदाताओंको, जिनमें से ८० प्रतिशत गांवोंमें रहते हैं, यह समझाना कि वे अपना मत अुन्हें ही दें, जो गांधीजीकी कल्पनाके अनुसार गांवोंकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा करें।

"२. यह सम्मेलन केन्द्र तथा प्रदेशोंकी सरकारें रचनात्मक कामोंके साथ जैसा व्यवहार कर रही हैं, अुस पर अपना दुःख प्रगट करता है; खासकर खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम, गोसेवा आदि सवालों पर सरकारकी नीति या नीतिके अभावका यह सम्मेलन विरोध करता है। जब तक रचनात्मक कामके अिन अंगोंका पोषण नहीं किया जाता, और जब तक सारे देशमें अुनका विस्तार नहीं किया जाता, तब तक यह निश्चयसे कहा जा सकता है कि देहाती जनताकी हालत बदतर होती जायगी और सरकार जनताका नैतिक समर्थन, जिसके बिना कोअी भी सरकार अपना काम बखूबी नहीं कर सकती, खोती जायगी।

"अिसलिअे यह सम्मेलन यह मांग करता है कि केन्द्रीय तथा प्रादेशिक सरकारें चरखा-संघ, ग्रामोद्योग-संघ, हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ, गोसेवा-संघ आदि गैरसरकारी संस्थाओंके सहकारमें अैसी व्यवस्था करे कि रचनात्मक काम पर सरकारका ध्यान रहे, अुसे बल मिले और वह देशमें ज्यादा फैले।"

अिन प्रस्तावोंसे यह जाहिर होता है कि अधिकांश रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंके मनकी हालत आज क्या है। प्रस्तावोंमें जो कहा गया है, अुसमें काफी सचाअी है। लेकिन मैं अुनसे आग्रह करूंगा कि वे अपनी शक्ति और समय अैसे कामोंमें न लगायें, जिनके लिअे वे स्वयं सरकारकी, कांग्रेस-संस्थाओंकी, विश्व-शान्ति-समिति (World Peace Committee) आदि संघटनोंकी आलोचना करते रहते हैं कि ये लोग न जाने कितनी योजनायें बनाते हैं, यहां-वहां हर जगह सम्मेलन करते हैं, विरोधके प्रस्ताव पास करते हैं, मतदाताओंकी शिक्षाकी बात करते हैं, मांगें पेश करते हैं, लेकिन यह स्पष्ट रूपसे नहीं जानते कि अगर अुन्हें अमान्य किया गया — जैसा कि पहलेसे ही कहा जा सकता है — तो वे क्या करेंगे।

योजनाओंके पहले बड़ी मेहनत और सावधानीसे अिन सवालोंका अध्ययन करनेकी जरूरत है। सम्मेलन बुलाये जायं, अिसके पहले ही अेक अैसे कार्यक्रमकी निश्चित रूपरेखा, जिसे कार्यकर्त्ता और जनता अपनी शक्ति और अपनी ही प्रेरणासे पूरा कर सकें, सोच लेनी चाहिये। मांग पेश करनेके पहले ही तय कर लेना चाहिये कि अुसके पीछे ताकत पैदा करनेके लिअे हम क्या करेंगे। सम्मेलनोंका आयोजन केवल कामकाजके लिअे ही होना चाहिये; सिर्फ प्रभावशाली भाषण देने और तीव्र भाषावाले प्रस्ताव पास करनेके लिअे नहीं। मौजूदा हालतके खिलाफ असन्तोष पैदा करने या अुसे जाहिर करनेके लिअे खास मेहनतका काम करनेकी आवश्यकता नहीं है। हम मान सकते हैं कि वह तो है ही। जो लोग सरकार चला रहे हैं, वे भी अिससे बेखबर नहीं हैं। और अुनमें से कअी तो अिसलिअे परेशान भी हैं और अुससे बाहर निकलनेकी राह ढूंढ़ते हैं। अुन्हें किसीके यह बतानेकी आवश्यकता नहीं है कि वे दलदलमें फंसे हैं। वे खुद ही अुससे बाहर निकलनेकी राह ढूंढ़ रहे हैं, और संभव हो तो अैसे आदमीकी खोजमें भी हैं जो अुनमें यह विश्वास जगा दे कि वह अुनका पथ-प्रदर्शन कर सकता है। अगर रचनात्मक कार्यकर्त्ता और अुनके संघ अैसा कर सकें, तो अुनके सम्मेलन लाभप्रद होंगे।

मतदाताओंसे यह कहना कि 'वे अुन्हें ही अपना मत दें जो गांधीजीकी कल्पनाके अनुसार गांवोंकी सेवाकी प्रतिज्ञा करें' बहुत फलप्रद नहीं होगा। प्रतिज्ञाअें हम आसानीसे कर डालते हैं; और आसानीसे करते हैं अिसलिअे अुतनी ही आसानीसे अुन्हें भूल भी जाते हैं। अैसा कोअी रचनात्मक कार्यकर्त्ता नहीं, जो प्रतिदिन विनोबाके ११ व्रत न दुहराता हो। और अैसा कोअी कांग्रेसी नहीं, जिसने अुस पत्रकमें आअी हुअी प्रतिज्ञा न ली हो, जिसे सन् '३० से प्रतिवर्ष २६ जनवरीके स्वातंत्र्य-दिनके अवसर पर सारी अुपस्थित जनता सामूहिक ढंगसे पढ़ती थी। प्रतिदिन सैकड़ों गवाह अदालतोंमें 'सच, सम्पूर्ण सच, सचके सिवा और कुछ न बोलने' की प्रतिज्ञा लेकर गवाही देते हैं। लेकिन 'तुम्हारा नाम क्या है?' अिस पहले ही प्रश्नका जवाब देनेके बाद कितने ही अैसे हैं जो अिस गम्भीर प्रतिज्ञाका अन्त आ गया समझते हैं! राजनीतिक सत्ताकी प्राप्तिके लिअे की गअी प्रतिज्ञाका तो कोअी अुतना भी खयाल नहीं करता, जितना गवाह अपनी शपथका। रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंको अपनी ताकत अिस किस्मके प्रचारमें नहीं खर्च करना चाहिये। रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंमें यदि राजनीतिक वृत्ति रखनेवाले कुछ लोग अैसा कुछ करनेमें ही सन्तोष पा सकते हों तो वे करें। लेकिन सामान्य कार्यकर्त्ताओंको अैसे काममें अपना समय, पैसा और शक्ति बरबाद करनेकी सलाह मैं नहीं दे सकता। राष्ट्रको अैसे सेवकोंकी आवश्यकता है, जिनमें चरित्रकी दृढ़ता और पवित्रता हो, जिनमें निष्ठा हो; अैसे लोगोंकी नहीं जिन्हें अेक प्रतिज्ञा-पत्रसे बांध लेना पड़ता है, जैसे कअी शख्सोंको फौजदारी कानूनकी कुछ धाराओंसे बांध लेना पड़ता है।

www.vinoba.in

हां, मैं अुनसे प्रस्ताव नंबर १ की क और ख धाराओं पर अपनी शक्ति केन्द्रित करनेके लिअे अवश्य निवेदन करता हूं।

पहले हम अिसकी साफ कल्पना कर लें कि हमें पाना क्या है। हम सरकारी तंत्र पर अधिकार करनेकी आकांक्षा न करें। हमें तो अुसके समानान्तर अेक दूसरा तंत्र पैदा करना है। यह तंत्र सरकारी तंत्रसे बिलकुल अलग प्रकारका होगा। अुसका संचालन लोग खुद ही करेंगे। वह जब तक सरकारका कुछ भी अुपयोग बाकी है, तब तक अुसे मिटानेकी कोशिश नहीं करेगा। लेकिन यह जन-साधारणका तंत्र अैसा होगा कि सरकार सहज ही अुसकी सेवक, अुसके कामकी पूर्तिका अेक साधन बन जायगी। जनताके हितोंके खिलाफ काम करनेकी ताकत अुसमें रह ही नहीं जायगी। जहां सवाल अुन शक्तियोंका है जो राष्ट्रकी सुरक्षाके खिलाफ हैं, वहां अुनका दमन करनेमें सरकार पूरी समर्थ हो। लेकिन राष्ट्रकी जनता और अुस जनताके स्वगठित तंत्रके सामने तो सरकारको झुकना ही चाहिये। आज भी वह कमजोर है, लेकिन जनताका कोअी अपना समानान्तर तंत्र न होनेके कारण वह डराने-धमकानेवालोंकी बात मानती है और खुद जनताको डराती-धमकाती है। अिसलिअे रचनात्मक संस्थाओंको चाहिये कि वे प्रत्यक्ष कामके द्वारा अपनेको बलवान बनायें और अिन डर और धमकीके बल पर मौज कर रहे लोगोंका रहना असंभव कर दें।

दूसरी जरूरत अिस बातकी है कि जन-साधारणका तंत्र अिस योग्य हो कि वह सरकारको सच्चरित्र, अीमानदार, कुशल और शिक्षित सेवक दे सके। अिसका यह मतलब नहीं कि वह सरकारके हरअेक विभागके लिअे अुपयोगी सेवक और अधिकारी तैयार करेगा। लेकिन वह जनताके नैतिक चरित्रमें अितना तेज भर देगा, अुसे अितना अूंचा अुठा देगा कि बेअीमान और भ्रष्ट नौकर सरकारमें टिक ही नहीं सकेंगे। श्री आर्यनायकम्‌की भाषामें कहें तो रचनात्मक कार्यक्रमके प्रत्येक कामका अेक बड़ा अुद्देश्य सारे राष्ट्रको और खासकर नयी पीढ़ीको **नयी तालीम**की दीक्षा देना है।

वर्धा, २६-२-'५१ **कि० घ० मशरूवाला**

(अंग्रेजीसे)

शराबसे होनेवाली आमदनी

भारतीय विधानकी ४७ वीं धारामें स्पष्ट आदेश दिया गया है कि:

> "लोगोंके आहार और जीवनके स्तरको अूंचा अुठाना तथा जनताकी सुख-सुविधाको बढ़ाना राज्य अपना प्राथमिक कर्तव्य समझेगा। अुसमें खास करके स्वास्थ्यको नुकसान पहुंचानेवाले मादक पेयों और पदार्थोंके व्यवहार पर — दवाको छोड़कर — प्रतिबन्ध लगानेका वह प्रयत्न करेगा।"

फिर भी बम्बअी और मद्रास राज्यको छोड़कर लगभग दूसरी हर जगह अिस आदेशके पालनमें शिथिलता और किसी न किसी तरहका असन्तोष और हिचकिचाहट दिखाअी जा रही है। अिसका कारण बिलकुल साफ है : शराबसे होनेवाली करोड़ोंकी आमदनीका लोभ। अिसी कारणसे अंग्रेज भी अपने शासनकालमें जनताका गुस्सा मोल लेकर भी शराब बन्द नहीं करते थे। कांग्रेसने गांधीजीके नेतृत्वमें लड़-लड़कर अिस कामको देशके सामने ही हमेशा रखा। अब स्वराज्य हो जाने पर भी अिसी लोभको फिर पैदा होते देखकर दुःख होता है।

सन् १९३६-३७ में कांग्रेस सरकारोंके हाथमें सत्ता आअी कि तुरन्त प्रान्तोंमें शराबबन्दीका काम हाथमें लिया गया। अुस समय खास कठिनाअी आमदनी छोड़नेकी नहीं थी, क्योंकि तब तो सभी लोग शराबबन्दीका जनताको दिया हुआ वचन पालनेको तैयार थे। खास कठिनाअी अंग्रेजी राज्यने शराबकी आमदनीके साथ शिक्षाका जो अनुचित सम्बन्ध जोड़ दिया था, अुसे तोड़नेकी थी। अंग्रेजी हुकूमतके जमानेमें सन् १९१९-२० में जो सुधार दाखिल किये गये, अुनमें शिक्षा और आबकारी-विभाग लोकमंत्रियोंको सौंपे गये थे। और यह नीति रखी गअी थी कि आबकारीसे जितनी आमदनी करो अुतनी शिक्षा पर खर्च कर सकते हो। अिस तरह अुन चतुर लोगोंने अपने आप शिक्षा पर और लोकमंत्रियों पर सहज ही जरूरी नियंत्रण लगा दिया था। गांधीजीने अिस शिक्षा और शराबकी आमदनीके अनुचित सम्बन्धको तोड़ दिया और शिक्षाके कामको तथा शराबबन्दीके कामको दो स्वतंत्र राष्ट्रीय कामोंके रूपमें देशकी राजनीतिके नकशेपर अलग-अलग कर दिया। अिसमें से बुनियादी या कमाअी करनेवाली शिक्षाकी क्रांतिकारी योजनाका जन्म हुआ; और सरकारोंने शराबबन्दीसे होनेवाले आमदनीके घाटेको पूरा करनेके लिअे जायदाद-कर और बिक्री-कर जैसे नये कर लगाये। अिसके बाद तो पहलेके अनुचित सम्बन्धका तलाक पक्का हो गया। अंग्रेजी शासन-नीतिमें यह जो मौलिक परिवर्तन हो गया, वह शराबबन्दीकी पहली विजय थी।

सन् १९४६ के बाद कांग्रेसने फिर देशके शासनकी बागडोर संभाली। अिसके साल भर बाद तो आजादी भी आ गअी। भारतका नया विधान बना और अुस पर अमल होने लगा। मतलब यह कि अब शराबबन्दीका काम सब जगह हाथमें लेनेमें किसी तरहकी रुकावट नहीं थी। बेशक, अिस बातसे अिनकार नहीं किया जा सकता कि नअी परिस्थिति अपने साथ नअी मुश्किलें और नअी झंझटें भी लायी। लेकिन अुनके कारणसे शराबबन्दीके राष्ट्रीय रचनाकार्यके बारेमें परेशान होनेकी जरूरत नहीं थी। पर अैसा होने लगा है, और अिसका कारण शराबकी आमदनीका लोभ ही है। सरकारको अैसा लगता है कि देशमें पुनर्निर्माणके बड़े-बड़े काम करने हैं, परन्तु पैसेकी तंगी है। अिसलिअे यदि आमदनीके अिस जबरदस्त साधनको छोड़नेके बजाय कुछ समय ठहर जायं तो क्या बुरा है? अिस मूल दलीलके साथ और वह सुन्दर दिखे अिस तरह अुसे ढांकनेके लिअे अूपरसे कितनी ही अच्छी मालूम होनेवाली दूसरी-तीसरी बातें कही जाती हैं। लेकिन अिन बातोंके सूझनेका कारण तो अूपर बताया हुआ आमदनीका लोभ ही है। यानी हमारी सरकारें भी अंग्रेजोंकी सरकारोंकी तरह ही फिरसे अिस लोभमें फंस गअी हैं। अब हम शिक्षाका खर्च निकालनेके लिअे शराबकी आमदनी नहीं चाहते, लेकिन हम अुसे अेक आमदनीके रूपमें ही चाहते हैं। दोनोंमें अितना ही फर्क कहा जा सकता है। लेकिन यह फर्क बहुत बड़ा नहीं है। यह तो निश्चित है कि शिक्षाके जैसे किसी न किसी प्रजाकार्यके लिअे ही जनताको जहर पिलाकर हम पैसा निकालनेकी ताकमें हैं। यह चीज हमें शोभा नहीं देती। बहुत करके पं०जवाहरलाल नेहरूने अेक-दो बरस पहले कहा था कि नमक पर कर लगानेका विचार हमें शोभा नहीं दे सकता; यह अेक राष्ट्रीय भावनाका प्रश्न भी है। यही बात शराबके विषयमें भी होनी चाहिये। शराब आमदनी करनेकी चीज ही नहीं है। वह तो बन्द करने जैसी अधार्मिक चीज है। शराबका जिसके लिअे डॉक्टरी अुपयोग हो और जिसे वह लेना स्वीकार हो, वह दवाकी मर्यादामें रहकर अुसका अुपयोग कर सकता है।

सौभाग्यसे बम्बअी राज्यने शराबबन्दीकी नीति अुचित रूपमें स्वीकारी है और दृढ़तासे सारे राज्यमें अुसे दाखिल किया है। अिसलिअे अूपरकी बात अुसे लागू नहीं होती। लेकिन अुस राज्यकी जनतामें से भी कुछ लोग जो अुसके विरुद्ध बोला करते हैं, अुसका कारण भी शराबसे होनेवाली आमदनीमें ही छिपा है। सरकारोंके लोभकी तरह ही अिन लोगोंके लोभ और स्वार्थका ही अिसमें मुख्य हिस्सा है। अिस बातका विचार करनेकी खास जरूरत है। अगले अंकमें हम अिसकी चर्चा करेंगे।

३-३-'५१ **मगनभाअी देसाअी**

(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

वनस्पति-भावनियंत्रणका अितिहास

वनस्पतिके निषेध और अुसे रंगनेके लिअे जनताकी ओरसे काफी कोशिश अिन दिनों हुअी है। अिस कोशिशकी हम सराहना करते हैं, लेकिन अुसकी धुनमें अेक महत्त्वकी बात बिलकुल भुला दी गअी है।

पिछले कुछ वर्षोंमें वनस्पतिके भाव लगातार बढ़ते रहे हैं। अभी तक जनताके किसी भी वर्गने अिस बातका कोअी विरोध नहीं किया। भावोंकी यह बढ़ती सिर्फ वनस्पतिको ही छूती हो, अैसा नहीं है; अुसका प्रभाव मूंगफलीके तेलके भावों पर भी होता है। भारतकी जनता प्रतिवर्ष करीब १०० करोड़ रतल मूंगफलीके तेलका व्यवहार करती है। नतीजा यह होता है कि भारतकी गरीब जनताका, जो वनस्पतिका बिलकुल अुपयोग नहीं करती, करीब २५ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष पूंजीपतियोंकी जेबमें चला जाता है।

वनस्पतिके निर्माता-व्यापारी समय-समय पर वनस्पतिके भाव बढ़ानेकी मांग करते रहे हैं और सरकार अुसे स्वीकार करती रही है। भावोंके अिस तरह बढ़ते रहनेसे अेक ओर तो चीजोंकी कीमतें चढ़नेकी प्रवृत्तिको बढ़ावा मिला है, दूसरी ओर मुद्रा-प्रसार भी और ज्यादा हुआ है। जनताने अिसे चुपचाप सहन कर लिया है; विरोधमें कोअी आवाज नहीं अुठाअी।

वनस्पतिके भाव बढ़ानेके लिअे आम तौर पर यह दलील दी गअी कि मूंगफलीके तेलके भाव बढ़ते रहे हैं। लेकिन मूंगफलीके तेलके भावोंमें बढ़ती होनेकी वजहसे वनस्पतिके भाव बढ़ाना अुचित नहीं है। हकीकत अिससे बिलकुल अुलटी है; वनस्पतिके भाव बढ़नेके कारण ही मूंगफलीके तेलके भाव बढ़ते रहे हैं।

वनस्पति और मूंगफलीके तेलके भावोंकी तुलनात्मक बढ़तीका कोष्टक

वनस्पतिके भावोंमें बढ़ती की तारीख	बढ़े हुअे भाव प्रति रतल	भाव बढ़नेके पहले मूंगफलीके तेलका भाव (प्रति मन)	भाव बढ़नेके बाद मूंगफलीके तेलका भाव (प्रति मन)	
२३-६-'४७	०-११-३ से ०-१३-३ हो गया	दर १८-०-०	तारीख २३-७-'४७	दर २१-२-०
२-१२-'४८	०-१४-०	२०-०-०	१४-१२-'४८	२०-१०-०
१-३-'४९	०-१४-६	२०-०-०	२१-३-'४९	२१-४-०
५-७-'४९	०-१५-३	२१-०-०	५-८-'४९	२२-६-०
			१५-९-'४९	२३-८-०
			१५-१०-'४९	२५-०-०
१-५-'५०	१-०-०	२२-४-०	२७-५-'५०	२३-११-०
३-८-'५०	१-०-९	२४-०-०	२३-८-'५०	२५-०-०

अेक मन = २८ रतल

अिस कोष्टकसे जाहिर होगा कि वनस्पतिकी कीमत जब भी बढ़ाअी गअी, तभी मूंगफलीके तेलकी कीमतमें भी बढ़ती हुअी। और वनस्पतिके अुत्पादकोंने तेलके भावमें बढ़तीकी बात कहकर सरकारसे वनस्पतिकी कीमतमें हर बार नअी बढ़ती करनेकी मांग की और सरकार अुसे स्वीकार करती रही।

अनुचित मुनाफा

कभी-कभी जब मूंगफली अपने मौसममें ज्यादा आ गअी है, तब या अन्य कारणोंसे वनस्पतिके भावोंके बढ़ने पर बढ़ी हुअी अुसकी कीमत ज्यादा नीचे चली गअी है। अैसे समय वनस्पतिके व्यापारियोंका नैतिक कर्तव्य यह था कि वे वनस्पतिकी कीमत भी अुसी प्रमाणमें कम करते। लेकिन अुन्होंने अिस अुद्योगके अितिहासमें कभी भी अपने कर्तव्य-बोधका यह परिचय नहीं दिया। और न सरकारने ही अुनसे अैसा करनेके लिअे कहा। फलतः जब कभी मूंगफलीके भाव गिरते हैं, तब अुन्हें और अधिक मुनाफा करनेका बढ़िया मौका मिलता है। अिससे मुनाफाखोरीकी प्रवृत्ति बढ़ती है। अिसके सिवा वनस्पतिके निर्माता कभी-कभी मूंगफलीके तेलका ४ माह तकका स्टाक रोक रखते हैं, जिससे बाजारमें तेलकी कमी हो जाती है और मूंगफलीके तेलके भाव फिरसे बढ़ जाते हैं।

पिछले तीन वर्षोंमें मूंगफलीके तेलके भावोंकी तुलनामें वनस्पतिके भाव कितने ज्यादा बढ़ते रहे हैं, अिसका कुछ खयाल अिस कोष्टकसे हो सकता है:

तारीख	मूंगफलीके तेलका भाव प्रति मन	वनस्पतिका बांधा हुआ अूपरी भाव प्रति रतल
१०-३-'४७	२१-८-०	०-११-३
१०-७-'४७	२०-३-०	०-१३-६
१०-११-'४७	१६-११-०	०-१३-६
१०-३-'४८	१७-१-०	०-१३-६
१०-७-'४८	१९-१४-०	०-१३-६
१०-११-'४८	२०-३-०	०-१३-६
१०-३-'४९	२१-०-०	०-१४-६
१०-७-'४९	२१-२-०	०-१५-३
१०-११-'४९	२०-१२-०	०-१५-३
१०-३-'५०	२२-०-०	०-१५-३
१०-११-'५०	२२-८-०	१-०-९

अिस कोष्टकको ध्यानसे देखें। ता० १०-३-'४७ को मूंगफलीका तेल रु० २१-८-० प्रति मनके भाव पर बेचा गया। अुसी समय वनस्पतिका भाव ०-११-३ प्रति रतल था। ता० १०-११-'४७ को मूंगफलीके तेलका भाव रु० १६-११-० प्रति मन हो गया, पर वनस्पति ०-१३-६ प्रति रतल बना रहा। फिर ता० १०-११-'४९ को मूंगफलीका तेल रु० २०-१२ प्रति मन था, और वनस्पति ०-१५-३ बेचा जाता रहा। अिस अुदाहरणसे यह साफ हो जाता है कि मूंगफलीके तेलकी कीमत १२ आने प्रति मन कम हो जाने पर भी लोगोंको वनस्पति पर ४ आना प्रति रतल ज्यादा देना ही पड़ा। सिर्फ अितना ही नहीं, अुसका असर दूसरे तेलोंके बाजार पर भी पड़ता है। अुनकी कीमत भी ४ आना प्रति रतल बढ़ जाती है।

अिस तरह जनताको २५ करोड़ रु० प्रति वर्षकी हानि अुठानी पड़ती है, कीमतें कम करनेका लक्ष्य असफल होता है और मुद्रा-प्रसारकी प्रवृत्तियोंको बढ़ावा मिलता है। मूंगफलीके तेलकी कीमतकी महंगाअीके कारण अुसका निर्यात बन्द हो जाता है, जिससे कि देशको विदेशी हुण्डावन नहीं मिलता।

वनस्पतिके भावोंमें अभी जो अन्तिम बढ़ती हुअी, अुससे मूंगफलीके तेलकी कीमतें चढ़ गअीं और यह अफवाह थी कि वनस्पतिके निर्माताओंने अिस आधार पर अपनी कीमतें और ज्यादा बढ़ानेकी नअी मांग पेश की है। लेकिन तभी मूंगफलीकी नयी फसल आ गयी और अुसकी कीमत गिर गयी, जिससे कि अुन्होंने अपनी मांग छोड़ दी। लेकिन लोगोंको चुप नहीं बैठना चाहिये। वनस्पतिके निर्माण पर रोक या अुसे रंगनेके साथ-साथ अुन्हें अिस बातका आन्दोलन भी करना चाहिये कि जब तक अुसका अुत्पादन चालू है, तब तक अुसकी कीमतें कम की जायें।

तेल और तिलहनके भाव वनस्पतिकी कीमत पर निर्भर रहते हैं। विदेशी हुण्डावनकी प्राप्ति और देशके सामान्य आर्थिक हितका खयाल करते हुअे यह जरूरी है कि वनस्पतिके भाव कम करनेके लिअे अेक जोरदार आन्दोलन किया जाय। अुम्मीद है कि जनता और सरकार दोनों अिस पर गौर करेंगे।

अेक विक्रेता

[नोट: यदि यह मान लें कि वनस्पतिका बनना बन्द नहीं होता और सरकार अुसे चलने देती है, तो क्या अुसकी कीमत मूंगफलीके

www.vinoba.in

तेलकी कीमतके अनुसार कम कर दी जाय या तेलोंकी कीमत वनस्पतिके भावोंके प्रमाणमें बढ़ा दी जाय, अिस सवाल पर अेक अलग दृष्टिकोणसे विचार करना चाहिये। किसी भी चीजकी कीमत, अुस चीजके निर्माणके प्रति सरकारकी नीतिके अनुसार कुछ हद तक तय करनी होगी। यदि अुसका अुत्पादन बढ़ाना है, तो अुसे सस्ता बेचनेकी नीति अख्तियार करनी होगी, और यदि अुसे घटाना है तो अुसे महंगा बेचना होगा, चाहे लागत कम ही हो। लेकिन हर हालतमें मुनाफा निर्माताको न मिलकर, देशके लाभके लिअे सरकारको मिलना चाहिये। अुदाहरणके लिअे, मूंगफलीका तेल तो हमेशा यथासंभव सस्ता ही बिकना चाहिये, क्योंकि वह गरीबोंकी खुराकका हिस्सा है। अगर अुसकी कीमत अितनी कम है कि तेल-घानीका धंधा करनेवालोंको अुचित लाभ नहीं होता, तो सरकार अुसकी सहायता करे और यह सहायताकी रकम वह वनस्पतिकी महंगाअीसे वसूल करे, लेकिन मूंगफलीके तेलको महंगा न होने दे। अिसी तरह यदि देशके स्वास्थ्य और मवेशीके संवर्धनकी दृष्टिसे घीके अुद्योगको बढ़ाना जरूरी है, तो घीको अितना महंगा नहीं होने देना चाहिये कि लोग अुसे खरीद ही न सकें। अिसलिअे वनस्पति घीकी होड़ करे और अुसे मार भगाये, अैसी हालत नहीं पैदा होने देनी चाहिये। अिसके लिअे भी यह आवश्यक होगा कि वनस्पति महंगा बेचा जाय, लेकिन अिस महंगाअीसे अुत्पन्न अतिरिक्त मुनाफा सरकारी खजानेमें जाना चाहिये, ताकि अुसका अुपयोग घीकी मददके लिअे हो।

वर्तमान पद्धतिकी बुराअी यह है कि तेल, घी और मवेशी सबकी हानि होती है और अिनकी हानि पर वनस्पतिका अुद्योग पनपता है; तिस पर वनस्पति खानेवालोंको भी कोअी लाभ नहीं होता। अेक निजी लाभके शोषक अुद्योगमें जितनी बुराअियां होती हैं, वे सबकी सब यहां मौजूद हैं।

१४-२-'५१ —कि० घ० म०]
(गुजरातीसे)

आसाम भूकंप राहत कोष

[ता० १२-२-'५१ से ३-३-'५१ तक]

नाम और स्थान	रु०आ०पा०
गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबादके सेवकोंकी तरफसे :	२३६-१२-०

१०१ रु० देनेवाले : श्री शंकरभाअी पटेल; **११ रु० देनेवाले :** श्री मगनभाअी देसाअी, श्री विठ्ठलदास कोठारी, श्री गोपालदास पटेल; **रु० १०-४-० देनेवाले :** श्री चन्द्रकान्त अुपाध्याय; **१० रु० देनेवाले :** श्री मगनभाअी पटेल, श्री बंसीलाल गांधी; **७ रु० देनेवाले :** श्री शांतिलाल गांधी; **५ रु० देनेवाले :** श्री चूनीलाल बारोट, श्री शिवशंकर शुक्ल, श्री भाअीलाल पटेल, श्री छगनलाल काछिया, श्री गिरिराज किशोर, श्री मुकुलभाअी, श्री पिनाकिन ठाकोर, श्री नानूभाअी बारोट, **३ रु० देनेवाले :** श्री मथुरीबहन खरे, श्री जयंतीलाल व्यास; **रु० २-८-० देनेवाले :** श्री रामटेकजी; **२ रु० देनेवाले :** श्री बाबुभाअी कोठारी, श्री महाशंकर दवे, श्री चन्द्रशंकर जानी, श्री जगदीशचन्द्र पटेल, श्री योगाबहन सोमण; **१ रु० देनेवाले :** श्री मणिभाअी पटेल, श्री मगनभाअी मिस्त्री, श्री तुलसीभाअी पटेल, श्री वीरबालाबहन, श्री छोटुभाअी पटेल, श्री भगवतीप्रसाद, श्री निर्मलाबहन।

श्री म० दे० समाजसेवा महाविद्यालय, अहमदाबादके विद्यार्थियोंकी तरफसे :	४४-०-०

६ रु० देनेवाले : श्री दशरथलाल शाह; **५ रु० देनेवाले :** श्री पुष्पाबहन पटेल; **३ रु० देनेवाले :** श्री सूर्यकांत पटेल; **२ रु० देनेवाले :** श्री जयंतीलाल मलकान, श्री धेलुभाअी नायक, श्री जयवंत कापड़िया, श्री नन्दलाल दवे; **१ रु० देनेवाले :** श्री मगनभाअी ना० पटेल, श्री मगनभाअी जो० पटेल, श्री करमशीभाअी, श्री हरीशभाअी, श्री डाहीबहन पटेल, श्री अंबुभाअी पटेल, श्री विष्णुभाअी, श्री मधुबहन पटेल, श्री कुसुमबहन पटेल, श्री मनुभाअी देसाअी, श्री परसदराव शास्त्री, श्री गोपालभाअी अिजारदार, श्री पुरुषोत्तम वाढेर, श्री अीश्वरभाअी पु० पटेल, श्री ठाकोरलाल वशी, श्री घनश्याम त्रिवेदी, श्री अिन्द्रवदन आचार्य, श्री गणेश जे० पटेल, श्री सरोज शाह, श्री अीश्वरभाअी हीं० पटेल, श्री विष्णुप्रसाद दवे, श्री रमेशभाअी परीख।

अ० म्यु० शिक्षकोंके कताअी-बुनाअी वर्गकी तरफसे :	४३-०-०

१ रु० देनेवाले : श्री गौरीशंकर ग० पंड्या, श्री केशवलाल अ० शाह, श्री अम्बालाल ना० अमीन, श्री कांतिलाल ज० त्रिवेदी, श्री चिमनलाल छोटालाल, श्री अंबाशंकर सां० त्रिवेदी, श्री डाह्याभाअी म० वहोरा, श्री हरमानभाअी फू० बारोट, श्री नटवरलाल हरजीभाअी, श्री भोलानाथ महासुखराम, श्री रसिकलाल र० जानी, श्री जेठालाल पुरोहित, श्री बबाजी मंगाजी, श्री नवीनचन्द्र बा० त्रिवेदी, श्री बाबुभाअी बा० त्रिवेदी, श्री बाबुभाअी दे० पटेल, श्री नन्दुबहन पूं० पंड्या, श्री कलावतीबहन बा० पंड्या, श्री मणिबहन त्रिवेदी, श्री योहानाबहन नं० महेता, श्री रूपालीबहन परीख, श्री ललिताबहन क० क्रिश्चियन, श्री शांताबहन वी० भावसार, श्री सविताबहन भू० जानी, श्री हरिगंगाबहन चूनीलाल, श्री महालक्ष्मीबहन डा० दलवाड़ी, श्री पावतीबहन ल० सोलंकी, श्री जेठीबहन छगनलाल, श्री रतिलाल रा० अध्वर्यु, श्री धीरजलाल नं० त्रिवेदी, श्री पुरुषोत्तम म० दवे, श्री अुमेदभाअी मा० वाघेला, श्री हरमानभाअी बापूभाअी, श्री लक्ष्मीबहन वीराजी, श्री आनन्दीबहन चिमनलाल, श्री प्रह्लादभाअी मो० पटेल, श्री छोटालाल त्रि० पटेल, श्री प्राणशंकर ही० जोशी, श्री शांतिलाल मो० शाह, श्री काशीबहन मो० पटेल, श्री पूंजाभाअी रा० पटेल, श्री राबियाबहन पीरभाअी, श्री केशवलाल गं० सोलंकी, श्री नारणभाअी डाह्याभाअी।

श्री गुजरात कुमार मंदिरके विद्यार्थियोंकी तरफसे :		३५-०-०
श्री गुजरात कुमार मंदिरके ७वें वर्गकी कताअीसे प्राप्त		३-०-०
श्री जेठालाल महाराज		३-०-०
श्री हीरुभाअी जरीवाला		५-०-०
श्री चंचलबहन कोठारी		५-०-०
अुमल्ला व रायसिंगपुराके कुछ भाअियोंकी तरफसे : द्वारा श्री भाअीलालभाअी, अुमल्ला		५५-०-०
श्री आर० पी० शर्मा	धुलिया	१-०-०
श्री शशीवन्द्र जैन	न्यूयार्क	२३-०-०
" रुस्तम अीरानी	"	१३-१३-०
" आदित्यप्रकाश	"	१०-५-०
" केतकर	"	४-९-०
डॉ० चौधरी	"	४-९-०
श्री देशबन्धु सिक्का	"	४-९-०
" वीरेन्द्रप्रसाद	"	४-९-०
पहुंच दी जा चुकी रकम		२७,७०७-७-६
कुल रु०		२८,२०३-१०-३

www.vinoba.in

भूकंप-पीड़ित आदिवासी

आसामके भूकम्प-पीड़ित अिलाकेमें राहतका काम करनेके लिअे स्व० श्री ठक्कर बापाने भील-सेवा-मंडल, दोहदके श्री डाह्याभाअी नायकको भेजा था। नीचेकी जानकारी स्व० श्री बापाको भेजी गयी श्री नायककी रिपोर्टके आधार पर तैयार की गयी है:

श्री डाह्याभाअी नायक अिस अिलाकेमें सदियाके मैदानों और अबोरके पहाड़ी क्षेत्रमें घूमे। भूकम्प-पीड़ित जनताका ८० प्रतिशत आदिवासी जातियां हैं। अिनमें मैदानोंकी मीरी और पहाड़ियोंकी अबोर और मिशमी जातियां हैं। प्रकृतिका कोप तो अुन पर हुआ ही है, मनुष्योंने भी अुन्हें कम कष्ट नहीं दिया। अुन्होंने बहुत दुःख अुठाया है।

अबोरके पहाड़ी जिलेका सरकारी मुख्य केन्द्र पाशीघाट है। अुसका क्षेत्रफल ९००० वर्गमील और जनसंख्या, जिसमें ज्यादातर अबोर हैं, ३ लाख है। अबोर पहाड़ियोंमें रहते हैं और मीरी मैदानोंमें रहते हैं। श्री नायकका कहना है कि अबोरकी अिस जनताका ३ माह तक शेष दुनियासे कोअी सम्बन्ध नहीं रहा; वह मानो कटकर बिलकुल अलग हो गयी थी। बाहरी दुनियासे अुसके सम्पर्कका अेकमात्र साधन बेतारका तार था। चावल, नमक और चाय, जो यहांके भोजनके मुख्य अंग हैं, १० दिसम्बर, '५० तक विमानसे गिराये जाते रहे। लेकिन अुसके बाद वह 'डाकोटा' विमान, जो यह काम कर रहा था, केन्द्रीय सरकारके आदेश पर वापिस चला गया। पहाड़ियोंमें जहां तहां जमीनका खिसकना और धंसना अितना ज्यादा हुआ था (कहा जाता है कि अेक जगह सात मील लम्बा गढ़ा हो गया था।) कि पहाड़ोंके सकरे रास्ते, जिनसे होकर अबोर लोग अपना चावल, नमक और सूत खरीदने पाशीघाट जाया करते थे, बिलकुल मिट गये थे। अिन रास्तोंकी मरम्मत अबोर लोगोंने की थी, लेकिन जहां कहीं रास्ता बहुत सकरा या ढालू था, वहां तो अुन्हें हाथ-पावोंके बल रेंगकर चलना पड़ता था। जमीनके अिस अुठने-गिरनेमें अबोर और मिशमियोंके अनेक गांव तो अुसके पेटमें अैसे समा गये कि अुनका कोअी चिन्ह ही शेष नहीं रह गया था। भूकम्पमें जिनकी जान गअी अैसे लोगोंकी संख्या २-३ हजार मानी जा सकती है। नदियोंकी बाढ़ोंने अिन अिलाकोंके विनाशमें कम हिस्सा नहीं लिया।

'अबोर' लोगोंका वर्णन करते हुअे श्री डाह्याभाअी नायक कहते हैं: अबोर बड़े भले लोग हैं। अुनमें कुछको अफीमका व्यसन जरूर है, लेकिन वह पुराने शासनकी देन है। परन्तु अफीमका प्रचार मिशमियोंमें जितना है अुतना अुनमें नहीं है। मिशमियोंसे वे ज्यादा बुद्धिमान और सयाने भी मालूम हुअे। शिक्षाके लिअे मैंने अुनमें अुत्सुकता देखी। पहाड़ियोंमें प्रदेशके शिक्षा-विभाग द्वारा संचालित २५ स्कूल हैं। किसी किसी स्कूलमें १०० से भी ज्यादा विद्यार्थी हैं। अबोर स्त्रियां बड़ी अुद्योगी हैं, कभी बेकाम नहीं बैठतीं। पाशीघाटके बाजारमें जंगली कंद या नारंगियां बेचते हुअे, या रास्तेमें अपने गांवोंकी ओर जाते हुअे— जो कि तीनसे सात दिन यानी ३० से ७० मील तक की दूरी पर हो सकते हैं — वे हमेंशा या तो बांसकी तकली पर कातती रहती हैं या अपनी सुन्दर और कलापूर्ण बुनाअी करती रहती हैं। किसी अबोर स्त्रीको जब हम कलाकी सुरुचिके साथ चुने हुअे विविध रंगोंवाले वस्त्रादि बुनते देखते हैं, तब लगता है कि भला अिन्हें कोअी असभ्य या अशिक्षित कैसे कह सकता है। वे अपनी बात प्रभावपूर्वक कह सकती हैं। कारण यह है कि अुन्हें अपनी जातीय पंचायतोंमें, जहां अुनके आपसी झगड़े सुलझाये जाते हैं और हरअेकको अपनी राय प्रकट करनी पड़ती है, अिस चीजकी तालीम मिलती है।

अिन आदिवासी जातियोंमें शिक्षाकी अवस्था पर लिखते हुअे श्री नायक कहते हैं: मैदानोंमें रहनेवाली मीरी जातिके लोग सामान्य जनताके सामाजिक जीवनमें घुल-मिल रहे हैं। मीरियोंके कुछ युवक सरकारी नौकरियोंमें हैं, कुछ कॉलेजकी शिक्षा पा रहे हैं। शिक्षा अुनमें बढ़ रही है और दस-पांच सालमें वे और लोगोंकी बराबरी पर आ जायंगे। लेकिन अबोरों, मिशमियों और नागा जातिके लोगोंमें शिक्षा-प्रचारके लिअे कड़ी मेहनतकी आवश्यकता होगी।

आसाम सरकारको ३१-१२-'५० तक राहतके कामके लिअे चंदेके रूपमें करीब ५१ लाख रुपयेकी रकम मिल चुकी है। खर्चके अनुमान-पत्रकमें सरकारने ५०,४०,००० रु० मंजूर किये हैं। यह खर्च अिस तरह होगा: (१) अुत्तर लखीमपुर, डिब्रूगढ़, सदियाका प्रान्त-वर्त्ती अिलाका, अबोरका पहाड़ी हिस्सा आदि जगहोंमें ५००० निराश्रित परिवारोंको दुबारा बसानेके सिलसिलेमें साधारण तैयारीका काम — ३९,७३,००० रु०, (२) पहाड़ियों, लोहित घाटी, और घांग घाटी आदि अिलाकोंमें, अबोरके कुछ हिस्से तथा स्लेड और सुवर्णश्री आदि रियासतोंमें कामके लिअे १०,६७,००० रु०। साधारण तैयारीके काममें कअी तरहकी सहायताअें शामिल हैं। जैसे, टीनकी चद्दरें, कपड़ा, कम्बल, बरतन, सूत, चरखे, कच्चे रेशमके कोश आदि बांटना, जंगल साफ करनेमें मदद करना, बांस और खेतीके औजार देना, विद्यार्थियों और शिक्षा-संस्थाओंकी सहायता करना, कुओंकी मरम्मत व मछुओंकी मदद करना, तथा पाथालीपम, सदिया और पाशीघाटमें तीन अनाथालय खोलना। पहाड़ी हिस्सोंमें चावल, नमक, चाय, आदि निःशुल्क बांटनेका काम होगा। अिसके सिवा भूकम्प द्वारा नष्ट-प्राय ७० स्कूलों और ४-५ केन्द्रीय स्कूलोंकी मदद की जायगी।

शक्ति आश्रम, गोपालपारा:— आसामके प्रधानमंत्री श्री मेधी आश्रममें २३-१२-'५० को अचानक ही आ गये, और अुन्होंने आश्रमकी प्रवृत्तियोंका मुआअिना किया। मधु-मक्खियोंके घरोंमें शहद भरा पड़ा था, पर अुसे निकालनेका साधन न होनेके कारण वह निकाला नहीं गया था। यह देखकर अुन्होंने यह साधन खरीदनेके लिअे १०० रु० अपनी अिच्छानुसार खर्च की जानेवाली रकममें से दे दिये। अुन्होंने आदेश दिया कि स्कूलोंके निरीक्षक और बुनियादी तालीमके कामके अधिकारी अिस संस्थामें आयें और सोचें कि क्या अिस संस्थाको अिस अिलाकेके — यहां ज्यादातर आदिवासी जातियोंकी ही बस्ती है — विद्यार्थियोंकी तालीमकी खातिर बुनियादी शिक्षाके केन्द्रमें परिवर्तित किया जा सकता है। अुन्होंने यह सिफारिश भी की कि संस्थाके लिअे दी गयी सरकारी सहायताकी रकम २००० रु० से बढ़ाकर २५०० या ३००० रु० कर दी जाय। अुन्होंने आश्रमके कामकी सराहना की और आशा प्रकट की कि वह स्वावलम्बी बन सकेगा।

(संघके जनवरी, '५१ के माहवारी पत्रसे)
(अंग्रेजीसे)

डी० रंगैया
कार्यकारी मंत्री,
भारतीय आदिम जाति सेवक संघ

विषय-सूची

		पृष्ठ
हिमालयके सबक — १	मीरा	१०
कोको-कोलाका भारत पर आक्रमण	ओक्टोपस	११
योजनायें और सभा-सम्मेलन	कि० घ० मशरूवाला	१२
शराबसे होनेवाली आमदनी	मगनभाअी देसाअी	१३
वनस्पति-भावनियंत्रणका अितिहास	अेक विक्रेता	१४
आसाम भूकंप राहत कोष		१५
भूकंप-पीड़ित आदिवासी	डी० रंगैया	१६
टिप्पणियां:		
सरकार जल्दी कदम अुठाये	कि० घ० म०	९
खुलासा	कि० घ० म०	९
'हरिजन' पत्रोंका मुफ्त वितरण	कि० घ० म०	९
अंग्रेजीका घेरा	म० दे०.	९

www.vinoba.in